Dr Kaushal Kumar
B.A. I
Econ

Commercial bank

नहीं होती है।" (Although the bankers create credit, The amount in which they create credit is not arbitrary and unlimited.) बैंकों की साख सृजन की शक्ति की निम्नलिखित मुख्य सीमाएँ हैं, जिनके चलते वे मनमानी ढंग से एवं असीमित मात्रा में साख का सृजन नहीं कर सकते:—

I) देश में नकद मुद्रा की कुल मात्रा (Total amount of cash in the country): साख सृजन का मुख्य आधार नकद मुद्रा है जिस देश में नकद मुद्रा की मात्रा जितनी ही अधिक होगी, उस देश में उतनी ही अधिक मात्रा में साख का निर्माण हो सकेगा। नकद मुद्रा के अन्तर्गत पत्र-मुद्रा तथा धातु-मुद्रा आती है, लेकिन पत्र-मुद्रा की अधिक प्रधानता होती है। दूसरी ओर यदि देश में मुद्रा की मात्रा कम होगी और उसके साख-निर्माण की शक्ति घट जायेगी और वे अधिक साख का सृजन नहीं कर सकेंगे।

II) प्राथमिक जमा की मात्रा (Amount of primary Deposit) प्राथमिक जमा की मात्रा ही वास्तव में साख-निर्माण की सीमा को निर्धारित करती है। प्राथमिक जमा की आधारशिला पर साख की विराट इमारत खड़ी हुई होती है। यदि बैंक को प्राथमिक जमा अधिक मात्रा में मिलेगी तो वह अधिक मात्रा में साख सृजन करेगा। इसके विपरीत प्राथमिक जमा की रकम में कमी होने से बैंक की साख निर्माण की शक्ति भी कम हो जायेगी।

(III) बैंक द्वारा रखे जाने वाले नकद कोष का प्रतिशत:- (percentage of Cash Reserve maintained by banks):- प्रत्येक बैंक को अपने कुल दायित्व (Total liabilities) का कुछ प्रतिशत नकद कोष के रूप में रखना पड़ता है ताकि वह अपने जमाकर्ताओं के नकद की माँग को पूरी कर सके। नकद कोष का प्रतिशत कितना होगा, यह बैंक अपने अनुभव से निश्चित करता है। बैंक जितना ही कम नकद कोष रखते हैं उतना ही अधिक ऋण देकर साख का सृजन कर सकते हैं। लेकिन यदि इसके लिए अधिक नकद कोष रखना आवश्यक हुआ तो वे कम साख का सृजन कर सकेंगे।

(IV) केन्द्रीय बैंक के पास जमा की राशि (Deposit amount with central bank):- प्रत्येक बैंक को अपने कुल दायित्व का कुछ प्रतिशत केन्द्रीय बैंक के पास रक्षित कोष (Reserve funds) के रूप में रखना पड़ता है। यदि इस रक्षित कोष की मात्रा अधिक होगी तो बैंक कम साख का निर्माण कर सकेगा और यदि इसकी मात्रा कम होगी तो वह अधिक साख का निर्माण कर सकेगा।

Cont.

(V) केन्द्रीय बैंक की साख नीति (credit policy of the central bank) बैंकों के साख सृजन के कार्य पर केन्द्रीय बैंक के साख नियंत्रण की नीति का भी प्रभाव पड़ता है। केन्द्रीय बैंक विभिन्न परिमाणात्मक एवं गुणात्मक तरीकों द्वारा साख का नियंत्रण करता है।

(VI) जनता में बैंकिंग की आदत (Banking habits of the people) यदि जनता में बैंकिंग की आदत विकसित हो चुकी है और लोग चेक तथा अन्य साख-पत्रों का प्रयोग करते हैं तो बैंक को अधिक मात्रा में जमा प्राप्त होगी और उसके साख-निर्माण की शक्ति बढ़ेगी।

(VII) नकद मुद्रा की वह मात्रा जो अपने पास रखना चाहते हैं (The amount of cash which the people wants to hold with it):- बैंक द्वारा साख निर्माण की मात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि लोग कितनी नकद मुद्रा अपने पास रखना चाहते हैं, इसे जनता की मुद्रा की नकद रूप में तरलता पसन्दगी कहते हैं। जब लोगों की तरलता पसन्दगी अधिक होती है तो वे बैंकों में कम मुद्रा जमा करेंगे और बैंक कम साख निर्माण कर सकेंगे, लेकिन यदि लोगों की तरलता पसन्दगी कम है, तो बैंकों को अधिक जमा प्राप्त होगी और वे अधिक साख का सृजन कर सकेंगे।

(VIII) बैंक में जमा रखने की इच्छा (Desire for Bank Deposit):- बैंकों के साख निर्माण की शक्ति लोगों द्वारा बैंक में जमा रखने की इच्छा पर भी निर्भर करती है। यदि लोग बैंक में अधिक जमा करना चाहेंगे तो बैंक अधिक साख का सृजन कर सकेंगे। लेकिन यदि लोग कम जमा करेंगे तो बैंकों के साख निर्माण की शक्ति सीमित हो जायेगी।

(IX) जमानत की प्रकृति (Nature of securities) हम जानते हैं कि बैंक ऋण देकर साख का निर्माण करते हैं लेकिन ऋण देने के पहले वे अपने ग्राहकों से कोई न कोई जमानत अवश्य रख लेते हैं। इस प्रकार जमानत के आधार पर ही ऋण दिया जाता है। और ऋण से साख का निर्माण होता है। इसीलिए कहा गया है कि "बैंक शून्य से जमा का सृजन नहीं करते, वे अन्य प्रकार के धन को मुद्रा के रूप में परिवर्तित कर देते हैं। अतः बैंकों को यदि अच्छी जमानत मिलेगी तो वे अधिक ऋण देकर अधिक साख का निर्माण कर सकेंगे। इसके विपरीत यदि उन्हें अच्छी जमानत नहीं मिलेगी तो वे अधिक ऋण भी नहीं दे सकेंगे और साख निर्माण की शक्ति सीमित हो जायेगी।

(X) साख अथवा ऋण की माँग (Demand for credit or loans)

बैंकों की साख निर्माण की शक्ति साख अथवा ऋण की माँग पर निर्भर करती है। यदि साख या ऋण की माँग ही नहीं होगी तो बैंक ऋण नहीं दे सकेंगे और सृजन भी नहीं कर सकेंगे। अतः साख निर्माण के लिए ऋणों की माँग होनी जरूरी है। यदि ऋणों की माँग अधिक होगी तो बैंक अधिक साख का सृजन कर सकेंगे और ऋणों की माँग में कमी होने से उनके साख-निर्माण की शक्ति सीमित होगी।

#

Dr Kaushal Kumar
B.A. I
Eco-II

Commercial bank

नहीं होती है।" (Although the bankers create credit, The amount in which they create credit is not arbitrary and unlimited) बैंकों की साख सृजन की शक्ति की निम्नलिखित मुख्य सीमाएँ है, जिनके चलते वे मनमानी ढंग से एवं असीमित मात्रा में साख का सृजन नहीं कर सकते:—

I) देश में नकद मुद्रा की कुल मात्रा (Total amount of cash in the Country): साख सृजन का मुख्य आधार नकद मुद्रा है जिस देश में नकद मुद्रा की मात्रा जितनी ही अधिक होगी, उस देश में उतनी ही अधिक मात्रा में साख का निर्माण हो सकेगा। नकद मुद्रा के अन्तर्गत पत्र-मुद्रा तथा धातु-मुद्रा आती है, लेकिन पत्र-मुद्रा की अधिक प्रधानता होती है। दूसरी ओर यदि देश में मुद्रा की मात्रा कम होगी और उसके साख-निर्माण की शक्ति घट जायेगी और वे अधिक साख का सृजन नहीं कर सकेंगे।

II) प्राथमिक जमा की मात्रा (Amount of primary Deposit) प्राथमिक जमा की मात्रा ही वास्तव में साख-निर्माण की सीमा को निर्धारित करती है। प्राथमिक जमा की आधारशिला पर साख की विराट इमारत खड़ी हुई होती है। यदि बैंक को प्राथमिक जमा अधिक मात्रा में मिलेगी तो वह अधिक मात्रा में साख सृजन करेगा। इसके विपरीत प्राथमिक जमा की रकम में कमी होने से बैंक की साख निर्माण की शक्ति भी कम हो जायेगी।

(III) बैंक द्वारा रखे जाने वाले नकद कोष का प्रतिशत:- (percentage of Cash Reserve maintained by banks):- प्रत्येक बैंक को अपने कुल दायित्व (Total liabilities) का कुछ प्रतिशत नकद कोष के रूप में रखना पड़ता है ताकि वह अपने जमाकर्ताओं के नकद की माँग को पूरी कर सके। नकद कोष का प्रतिशत कितना होगा, यह बैंक अपने अनुभव से निश्चित करता है। बैंक जितना ही कम नकद कोष रखते हैं उतना ही अधिक ऋण देकर साख का सृजन कर सकते हैं। लेकिन यदि उसके लिए अधिक नकद कोष रखना आवश्यक हुआ तो वे कम साख का सृजन कर सकेंगे।

(IV) केन्द्रीय बैंक के पास जमा की राशि (Deposit amount with central bank):- प्रत्येक बैंक को अपने कुल दायित्व का कुछ

Cont.

प्रतिशत केन्द्रीय बैंक पास रक्षित कोष (Reserve fund) के रूप में रखना पड़ता है। यदि उस रक्षित कोष की मात्रा अधिक होगी तो बैंक कम साख का निर्माण कर सकेगा और यदि इसकी मात्रा कम होगी तो वह अधिक साख का निर्माण कर सकेगा।

(V) केन्द्रीय बैंक की साख नीति (Credit policy of the central bank) बैंकों के साख सृजन के कार्य पर केन्द्रीय बैंक के साख नियंत्रण की नीति का भी प्रभाव पड़ता है केन्द्रीय बैंक विभिन्न परिमाणात्मक एवं गुणात्मक तरीकों द्वारा साख का नियंत्रण करता है।

(VI) जनता में बैंकिंग की आदत. Banking habits of the people. यदि जनता में बैंकिंग की आदत विकसित हो चुकी है और लोग चेक तथा अन्य साख-पत्रों का प्रयोग करते हैं तो बैंक को अधिक मात्रा में जमा प्राप्त होगी और उनके साख-निर्माण की शक्ति बढ़ेगी।

(VII) नकद मुद्रा की वह मात्रा जो अपने पास रखना चाहते हैं (The amount of cash which the people wants to hold with it):- बैंक द्वारा साख निर्माण की मात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि लोग कितनी नकद मुद्रा अपने पास रखना चाहते हैं, इसे जनता की मुद्रा की नकद अथवा तरलता पसन्दगी कहते है। जब लोगों की तरलता पसन्दगी अधिक होती है तो वे बैंकों में कम मुद्रा जमा करेंगे और बैंक कम साख निर्माण कर सकेंगे, लेकिन यदि लोगों की तरलता पसन्दगी कम है, तो बैंकों को अधिक जमा प्राप्त होगी और वे अधिक साख का कर सकेंगे।

(VIII) बैंक में जमा रखने की इच्छा (Desire for Bank Deposit):- बैंकों के साख निर्माण की शक्ति लोगों द्वारा बैंक में जमा रखने की इच्छा पर भी निर्भर करती है। यदि लोग बैंक में अधिक जमा करना चाहेंगे तो बैंक अधिक साख का सृजन कर सकेंगे। लेकिन यदि लोग कम जमा करेंगे तो बैंकों के साख निर्माण की शक्ति सीमित हो जायेगी।

(IX) जमानत की प्रकृति (Nature of securities) हम जानते हैं कि बैंक ऋण देकर साख का निर्माण करते हैं लेकिन ऋण देने के पहले वे अपने ग्राहकों से कोई न कोई जमानत अवश्य रख लेते हैं। इस प्रकार जमानत के आधार पर ही ऋण दिया जाता है। और ऋण से साख का निर्माण होता है। इसीलिए कहा गया है कि "बैंक शून्य से जमा का सृजन नहीं करते, वे अन्य प्रकार के धन को मुद्रा के रूप में परिवर्तित कर देते हैं। अतः बैंकों को यदि अच्छी जमानत मिलेगी तो वे अधिक ऋण देकर अधिक साख का निर्माण कर सकेंगे। इसके विपरीत यदि उन्हें अच्छी जमानत नहीं मिलेगी तो वे अधिक ऋण भी नहीं दे सकेंगे और साख निर्माण की शक्ति सीमित हो जायेगी।

(X) साख अथवा ऋण की माँग (Demand for credit or loans)

बैंकों की साख निर्माण की शक्ति साख अथवा ऋण की माँग पर निर्भर करती है। यदि साख या ऋण की माँग ही नहीं होगी तो बैंक ऋण नहीं दे सकेंगे और सृजन भी नहीं कर सकेंगे। अतः साख निर्माण के लिए ऋणों की माँग होनी जरूरी है। यदि ऋणों की माँग अधिक होगी तो बैंक अधिक साख का सृजन कर सकेंगे और ऋणों की माँग में कमी होने से उनके साख-निर्माण की शक्ति सीमित होगी

#